# अंतरिक्ष सूट में बंदर

**अमृतलाल नागर**

*(इस काल्पनिक कहानी में एक लड़की की कहानी है, जो घूमती-घूमती परलोक से हमारी धरती पर आ जाती है । यहाँ का वातावरण, फूल तथा प्राणी उसे बहुत अच्छे लगते हैं । बाबा जी उसकी मदद करते हैं । उसके माता-पिता भी भारत-भूमि पर आकर खुश होते हैं । वे बाबा जी को अपने साथ चलने के लिए कहते हैं, लोकिन बाबा जी मना कर देते हैं । वे कहते हैं कि जब भारत देश के बच्चे उनके लिए सूट बनाएँगे तब वे परलोक की सैर पर जाएँगे । अंत में बच्चों से बाबा जी की इच्छा पूरी करने के लिए प्रार्थना की गई है।)*

आकाश के अनगिनत तारों में हमारी धरती की तरह ऐसी बहुत-सी धरतियाँ हैं, जिनकी सभ्यता शायद हमसे अधिक बढ़ी-चढ़ी हुई हैं । एक जगह तो नन्हे-मुन्ने बच्चे तक अंतरिक्ष की सैर किया करते हैं । उन्होंने ऐसे अंतरिक्ष सूट बना लिए हैं, जिसमें छोटी किंतु बड़ी ही शाक्तिशाली मशीनें लगी हुई हैं । नन्हे-नन्हे ट्रांजिस्टरों जैसे रॉकेट लगे हुए हैं । बच्चे उसे पहनकर मशीनों को चलाते हुए आकाश में लाखों मील की सैर बड़ी आसानी से कर लिया करते हैं । उन्हीं में एक लड़की थी । उसकी आयु आठ-नौ साल से अधिक न थी, पर वह बड़ी तेज और साहसी थी । अपने स्कूल की अंतरिक्ष दौड़ों में वह कई बार फास्ट आ चुकी थी और छुट्टियों में अक्सर वह इतनी-इतनी दूर उड़ा करती थी, जितनी दूर तक उस दुनिया के बड़े-बड़े उड़ाकू भी नहीं गए होते थे ।

एक दिन अपना अंतरिक्ष सूट पहनकर वह लड़की उड़ी और खेल के जोश में अपनी उड़ान की गति तेज करते करते आकाश में ऐसी जगह पहुँच गई जहाँ लाखों मील तक घना अंधकार छाया था । बस अँधेरा-ही-अँधेरा, घटाटोप अँधेरा । अँधेरे के कारण वह लड़की घबरा तो अवश्य गई पर उसने हिम्मत न हारी । अपने सूट में लगी नन्ही शक्तिशाली मशीनों की सहायता से पूरी स्पीड में, यानी एक सेकेंड में पाँच हजार किलोमीटर की उड़ान भरते हुए दो घंटे में आखिरकार उसने वह अंधकार पार कर ही लिया । संयोग से वह हमारी पृथ्वी पर आ गई और कश्मीर में अमरनाथ के पास एक झील के किनारे उतरी । वह लड़की बेहद थक गई थी और नई दुनिया में आने के कारण कुछ घबराई हुई भी थी । फिर भी, आस-पास का दृश्य देखकर वह बड़ी खुश हुई । सुंदर झील देखकर उसकी नहाने

की इच्छा हुई । एक चट्टान की आड़ में अपना अंतरिक्ष सुट रखकर वह झील में नहाने लगी । उसकी दुनिया में जलवायु तो लगभग हमारी दुनिया जैसी ही थी, पर वहाँ का पानी यहाँ जैसा निर्मल और शीतल नहीं होता, हवा में भी ऐसी बहार नहीं, इतने चटक रंग के सुंदर सुगंधित फूल भी उसने पहली ही बार देखे थे । नहा-धोकर वह एकदम ताजी हो गई और उसे भूख लग आई । भोजन की तलाश में वह आस-पास भटकने लगी । उसने अंतरिक्ष सूट अपने कंधे पर रख लिया था ।

झील के पास ही पेड़ों के झुरमुट में एक बूढ़े साधु रहते थे । उनके पास बंदर-बंदरिया का एक पालतू जोड़ा भी था । बूढ़े बाबा ने अपनी कुटी के सामने एक बड़ी सुंदर और प्यारी-प्यारी लड़की को भटकते देखा तो उठकर आए । पूछने लगे, बेटी कहाँ से आई हो ? वह लड़की उनकी बोली तो न समझी, पर बात अवश्य समझ गई । आकाश की ओर संकेत करके उसने कहा कि परलोक से आई हूँ और भूखी हूँ । बूढ़े बाबा भी उसके आकाश की ओर वाले इशारे को तो न समझे पर भूख की बात समझ गए, तुरंत कुटी में से मीठे फल ले आए । लड़की खुशी से फल खाने लगी । बूढ़े बाबा ने उसके लिए तुरंत अपनी गाय दुही और दूध ले आए । लड़की को स्वाद -सुख मिला । बोली न समझने पर भी उनमें इशारों से खूब हँसाइयाँ हुईं । बाबा ने बंदर - बंदरिया के खेल दिखलाकर उसको खूब हँसाया । लड़की अब अपनी दुनिया, अपने घर जाने के लिए अंतरिक्ष सूट पहनने लगी । यह अजब पोशाक देखकर बाबा को बड़ी हैरानी हुई । उनसे भी अधिक बंदरों को हैरानी हुई । उन्हें शायद यह अचरज लगा होगा कि यह जो अभी प्यारी -प्यारी लड़की जैसी लग रही थी, एकाएक बेदुम की विचित्र बंदरिया कैसे बन गई । और फिर उस 'बंदरिया' ने एकाएक अपने सूट में टँके हुए एक नन्हे - से चक्के को घुमाया और सर्र से ऊपर उठ गई । बाबा जी को अब लड़की के उस संकेत का सही अनुमान लगा जो उसने अपने घर का पता बतलाने के लिए आकाश की ओर हाथ उठाकर किया था । खैर !

लड़की पाँच-छह घंटे की उड़ान के बाद वापस अपनी दुनिया में पहुँच गई । फिर तो उसे ऐसा चसका लग गया था कि हर छुट्टी के दिन वह बाबा जी के पास उड़ आती और मजे से झील में तैरती, नहाती, मीठे फल खाती और बंदर-बंदरिया के तमाशे देखकर बाबा जी के साथ खूब हँसा करती । आते-जाते वह थोड़ी - बहुत हिंदी भी सीख गई थी ।

बंदर उस लड़की को अपना अंतरिक्ष सुट उतारते, पहनते और नन्हा चक्का घूमाकर उड़ते हुए बराबर गौर से देखा करता था । एक दिन जब लड़की नहा रही थी और बाबा जी फल तोड़ने गए थे, बंदर ने वह अंतरिक्ष सुट पहन लिया और चक्के को घुमाते ही आसमान में उड़ने लगा । लड़की ने नहाते हुए जब यह देखा तो वह बड़ी घबराई । बाबा जी ने भी देखा और परेशान होकर दौड़ते हुए आए । बंदर आसमान में उड़-उड़कर परेशान हो रहा था और दूसरे पंछियों को भी अपनी उलटी-सीधी उड़ानों से परेशान कर रहा था ।

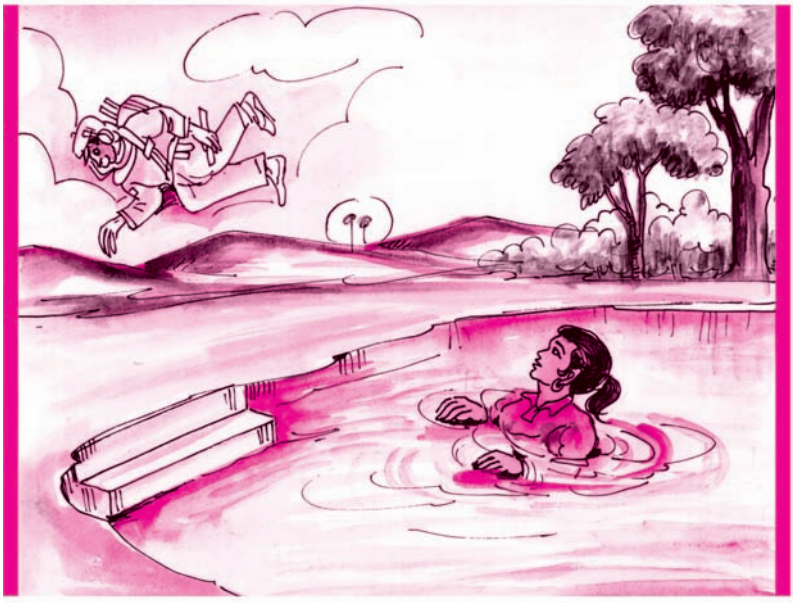

कभी चक्का घुमाते ही सर्र से ऊपर जाता फिर नीचे आता । कभी घबराहट में दूसरा चक्का घुमाता और उलट जाता । वह भी घबरा रहा था और घबराहट में दोनों चक्के घुमाकर वह और भी परेशान हो रहा था । कभी सर्र से ऊपर कभी सर्र से नीचे, कभी खट से सीधा कभी पट से उलटा !

लड़की को यह घबराहट हो रही थी कि अगर उसकी मशीनें बिगड़ गईं तो वह अपने घर कैसे पहुँचेगी । वह रोने लगी । बाबा जी ने उसे दिलासा दिया और बंदर को नीचे लाने की तरकीब करने लगे । उन्होंने बंदरिया के गले में रस्सी का फंदा डालकर पेड़ की ऊँची डाल से बाँध दिया और उसे सड़ासड़ सांटियाँ मारने लगे । बंदरिया जोर जोर से 'चीं-चीं-चीं' चिल्लाने लगी । बंदर उसकी आवाज सुनकर घबरा गया और उलटे-सीधे चक्के घुमाकर नीचे आने के जतन करने लगा । राम-राम करके वह पकड़ाई में आया । लड़की को अपना सुट मिला । मशीनों के कल -पुरजे सौभाग्य से ठीक थे । बाबा जी ने उसके सुट में टँगे झोले में फल रख दिए । वह उड़ गई ।

उस दिन बंदरलीला के कारण उसे घर पहुँचने में काफी देर हो गई । जब उसके माँ - बाप ने पूछा तब उसने सच-सच बतला दिया और अपने घरवालों को हमारी दुनिया के फल खिलाए । वे सब बड़े प्रसन्न हुए । अगली छुट्टी पड़ने पर वे अपनी बेटी के साथ बाबा जी से मिलने आए । अपने यहाँ के मेवे खिलाए, पर हमारे फल उनके सेवों से अधिक स्वादिष्ट थे । चलते समय लड़की के माता-पिता ने बाबा जी से कहा कि हमारी दुनिया की सैर करने चलिए । वह उनके लिए एक अंतरिक्ष सूट भी अपने साथ लाए थे, परंतु बाबा जी ने लड़की के द्वारा उसके पिता से कहा कि जब उनके भारत देश के बच्चे बड़े होकर ऐसा ही सूट ईजाद कर लेंगे, तभी वह जाएँगे । बच्चो, बाबा जी के लिए ऐसा सूट बना दो ।

## शब्द-अर्थ

अंतरिक्ष - आकाश

घटाटोप - घने बादलों की छाई हुई घटा

शीतल- ठंडा

तुरंत - जल्दी

घना - गहरा

निर्मल - स्वच्छ

परलोक - दूसरा लोक

बेदुम- बिना दुम या पूँछ के

ईजाद - आविष्कार, नई चीज बनाना

## अभ्यास

**बोध और विचार :**

१. अंतरीक्ष की क्या-क्या विशेषताएँ थीं ?

२. साधु बाबा ने लड़की की देखभाल कैसे की ?

३. बंदर ने क्या शरारत की ?

४. लड़की को धरती की वस्तुएँ कैसी लगीं ?

५. बाबा जी ने क्या कह कर लड़की के साथ जाने से मना कर दिया ?

६. बंदर को नीचे लाने के लिए साधु बाबा ने क्या उपाय किया ?

**भाषा-बोध :**

क. नीचे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं, उन शब्दों के लिंग बदलो :

लड़की.....

बूढ़ा.....

माता.....

बेटी.....

श्रीमान.....

साधु.....

(ख) शब्द के अंत में 'ई' प्रत्यय जोड़कर संज्ञा शब्द बनाओ :

पढ़ा .....

बना .....

रंगा.....

कढ़ा .....

बुना .....

## अनुभव विस्तार :

१. अब तक भारत के कितने अंतरिक्ष यान छोड़े गए हैं ?

२. अंतरिक्ष यान के बारे में और जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ अंतरिक्ष यान छोड़े जाने के चित्रों का संग्रह करो ।

३. कल्पना के आधार पर बताओ कि बीस वर्ष बाद भारत की तस्वीर क्या होगी ?